नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली)

दिनांक 19.07.2024 को सम्पन्न समिति की 11वीं बैठक का कार्यवृत्त

समिति की 11वीं बैठक नराकास (उत्तरी दिल्ली) के अध्यक्ष डॉ. त्रिलोचन माहपात्र की अध्यक्षता में दिनांक 19.07.2024 को डॉ. बी पी पाल सभागार, एनबीपीजीआर, पूसा, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक की तिथि पर कुल सदस्य कार्यालयों की संख्या 68 है। बैठक में कुल 130 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

बैठक का आरंभ श्री उमाकान्त दुबे, सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास)(उत्तरी दिल्ली)/ उप-पंजीकार, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने बैठक में उपस्थित मुख्य अतिथि सहित समस्त अतिथियों का स्वागत अपने स्वागत भाषण से व पुष्पगुछ से किया व बैठक में उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत भी किया। श्री उमाकान्त दुबे ने नराकास (उत्तरी दिल्ली) के समस्त कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा के लिए श्री अशोक कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) को मंच पर आमंत्रित किया।

अशोक कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), डीआरडीओ ने बैठक में उपस्थित नराकास (उत्तरी दिल्ली) के समस्त कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा का व्याख्यान किया और समस्त कार्यालयों को उनके द्वारा किए जा रहे हिंदी कार्यों का विवरण एवं प्रतिशत प्रस्तुति द्वारा बताया, समस्त कार्यालयों को अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित भी किया और कार्यालयों को सुधार के लिए आवश्यक जानकारी दिया जिससे हिंदी में कार्य अधिक से अधिक किए जा सके।

श्री कुमार पाल, उप-निदेशक, राजभाषा विभाग ने अपने वक्तव्य में अवगत कराया कि दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए और समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्यालय में हिंदी भाषा में अपना अधिक योगदान देना चाहिए। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि वर्तमान में पूरे देश में 530 नराकास कार्य कर रहे है| और हिंदी में "4 प्र" जिसमे 1. प्रकाशन 2. प्रशिक्षण 3. प्रयोग व 4. प्रोत्साहन का कार्यालय में प्रयोग पर बल दिया और हिंदी की 4 दिशा बताया| उन्होंने कहा: प्रथम 'प्र यानी **प्रकाशन** - किताबो के रूप में तकनीकी शब्दावली पत्रिका का प्रकाशन हिंदी में अवश्य होते रहना चाहिए; यदि प्रकाशन में पीछे है तो पत्रिका का प्रकाशन करना चाहिए| दूसरे '**प्र**' यानी **प्रशिक्षण** के बारे में भी अवगत कराया कि 1952 में हिंदी प्रशिक्षण योजना हुई व प्रशिक्षण केंद्र दिल्ली में 'क क्षेत्र' वार्षिक लक्ष्य 75% है जो हिंदी माध्यम से चल रहे है| प्रशिक्षण कालेज में प्रशिक्षण का आयोजन होता है| श्री कुमार पाल जी ने अवगत कराया कि कम से

कम 3 महीने में एक हिंदी की कार्यशाला अवश्य आयोजित करे| तीसरे 'प्र' यानी **प्रयोग** के बारे में श्री कुमार पाल जी ने कहा आंकड़े बता रहे है कि कार्यालयो में धारा 3(3) का अनुपालन नहीं हो रहा| टेंडर बिड डॉक्यूमेंट अंगेजी में किया जाता है, जबकि वह हिंदी में भी यानी द्विभाषी होना चाहिए| जेम (GeM) पर पहले केवल अंग्रेज़ी भाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन अब हिंदी भी दिखने लगी है | चौथे 'प्र' यानी **प्रोत्साहन** के बारे में अवगत कराया कि प्रेरणा सद्भावना के साथ प्रोत्साहन कार्यशालाओ का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमे क्षेत्रीय पुरस्कार दिए जाने चाहिए| पद सृजन व भर्ती पर भी कार्य करना बहुत जरुरी है| हिंदी के अधिकांश पद खाली है जिनका भरा जाना आवश्यक है| हिंदी जन भाषा है जो संघ की राजभाषा बनी| श्री कुमार पाल जी ने क से कलम, कंठ व कम्प्यूटर उपयोग पर भी जोर दिया तथा बताया हिंदी तीसरी सबसे बड़ी भाषा हैं और कर्मचारी बीमा निगम अपना पूरा कार्य हिंदी भाषा में कर रहा है |

खुली चर्चा व विचार विमर्श के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदी में अपने संदेह दूर करने के लिए मंच पर उपस्थित अधिकारियों से अपने सुझाव व्यक्त किए।

- मनोज कुमार खंडेलवाल, राष्टीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रश्न किया गया के टिप्पणी एवं आदेश पर पृष्ठ कैसे गिने| उन्हें अवगत कराया गया कि 50% से अधिक टिप्पणियाँ हिंदी में है तो पूर्ण पृष्ठ के रूप में गिने|

- अनिल कुमार, प्रचार्य, केन्द्रीय विद्यालय सेक्टर -22 रोहिणी ने व्हाट्सएप (whatapp) ग्रुप बनाये जाने के लिए सुझाव दिया|

- संघमित्र, राजभाषा अधिकारी, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अवगत कराया कि 18 अधिकारियो पर 1 राजभाषा का पद होना चाहिए|

- श्री द्विवेदी, ईपीएफओ(EPFO) ने ई पत्रिका का सुझाव दिया| नराकास की पत्रिका होनी चाहिए तथा ई- पत्रिका प्रकाशित कर सकते है|

- पत्रिका प्रकाशन के सन्दर्भ में केन्द्रीय विद्यालय, बवाना ने "कुमायूं दर्पण" पत्रिका का उदाहरण देकर पत्रिका प्रकाशन हेतु अनुरोध किया|

- श्री जय नारायण उपाध्याय, हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली द्वारा नराकास अध्यक्षीय कार्यालय को अन्य जगह स्थानांतरित करने का सुझाव दिया |

इस प्रकार से अनेक प्रश्न इस मंच पर आ रहे है जिनसे संबंधित सूचना राजभाषा विभाग वेबसाइट पर उपलब्ध है और जिन बिंदुओं पर संदेह है उसके बारे में जानकारी के लिए राजभाषा विभाग से सम्पर्क कर सकते है|

डॉ. जी. पी सिंह, निदेशक, एनबीपीजीआर ने डॉ त्रिलोचन माहपात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण और मंच पर उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत करते हुए व दिए गये सुझावों की प्रशंसा करते हुए हिंदी भाषा के महत्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किए और हिंदी भाषा का अधिक उपयोग करने की सलाह दी| राजभाषा या राष्ट्रभाषा या मातृभाषा का प्रयोग करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए, अंग्रेज़ी व्यवसाय की भाषा है, पर हिंदी अपनी भाषा है और कई सॉफ्टवेर है जो हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा देते है जिसमे सरल भाषा में तकनीकी शब्दावली का प्रकाशन किया है | एनबीपीजीआर(NBPGR) "संवाद" के नाम से पत्रिका का प्रकाशन करता है| आईसीएआर (ICAR) के समस्त कार्यालय एक साथ कार्य करते है| एनबीपीजीआर (NBPGR) विश्व का दूसरा सबसे बड़ा जीन बैंक है जिसको अवलोकन करने हेतु सब को आमंत्रित किया गया|

डॉ. डी.के. अग्रवाल, महापंजीकार, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण डॉ त्रिलोचन माहपात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण और मंच पर उपस्थित समस्त अधिकारियों का स्वागत किया और अवगत कराया कि राजभाषा का कार्यान्वयन वर्ष 1975 से हो रहा है | सभी लोगो की लिखने की आदत छूट गयी है और अब पत्र नहीं लिखे जाते है | हिंदी बाजारू भाषा बन के रह गयी है| हिन्दुस्तान में 22 भाषाओ का उल्लेख संविधान में है जिसमे 6 शास्त्रीय भाषा यथा तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, संस्कृत व ओडिया है| डॉ. डी.के. अग्रवाल ने अवगत कराया कि अपने कार्यालय में गूगल आईएमई(IME) टूल से टंकण कर सकते है| अंत में उन्होंने एक पंक्ति का उपयोग करते हुए कहा **"समय अभी शेष है, हमें और आगे जाना है"**|

डॉ. संजय कुमार, अध्यक्ष, एएसआरबी बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया| उन्होंने नमस्ते/नमस्कार, निमंत्रण/आमंत्रण, प्रगति/उन्नति, निदेशक/निर्देशक, विद्यार्थी/छात्र आदि जैसे शब्दों में अंतर बताते हुए अपना अनुभव साझा किया| हिंदी राजभाषा समिति द्वारा एक ऐसा प्रारूप तैयार किया जाए जिस प्रारूप से आधार पर संसदीय समिति को कार्यालय की गतिविधियों को बता सकते है|

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण ने बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का नराकास की 11 बैठक में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद किया और कहा कि हिंदी भाषा का प्रयोग

ज्यादा से ज्यादा करें। उन्होंने बताया की हिंदी उनकी मातृ भाषा नहीं है फिर भी वह सभी बैठको में हिंदी में भाषण देते है तथा किसानो से चर्चा/संवाद हिंदी में ही करते है। भाषा जानना और ठीक से प्रयोग किया जाना अलग है। हिंदी का प्रयोग करना आसान नहीं है लेकिन सविंधान के अनुसार चलना है तो राजभाषा को ग्रहण करते हुए प्रोत्साहन देना है। भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। हमारे कामकाज में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग होना चाहिए।

डॉ. महापात्र, अध्यक्ष, नराकास (उत्तरी दिल्ली) एवं पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा निम्नानुसार कार्य बिंदुओं पर जोर दिया :-

1. समस्त समीक्षा संक्षिप्त हों और द्विभाषी होना चाहिए।
2. विभागों व संस्थानों रिपोर्ट समय पर भेजी जानी चाहिए, जो संस्थान अच्छा कार्य कर रहे है उन्हें प्रशंसा पत्र दिया जाए।
3. 6 संस्थानों ने रिपोर्ट जमा नही की है; ये सारे संस्थान को पत्र प्रेषित किया जायेगा।
4. समस्त कार्यालय अपनी छमाही रिपोर्ट समय से भेजना सुनिश्चित करे।
5. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन अवश्य सुनिश्चित किया जाए।
6. 'क','ख' और 'ग' क्षेत्र में पत्राचार में लक्ष्य प्राप्ति की ओर ध्यान केन्द्रित करे एवं नियमानुसार पत्राचार किया जाए।
7. 10 सदस्यीय समन्वय समिति की बैठक में समस्त बिंदुओं पर विचार विमर्श कर निराकरण करना सुनिश्चित करें।

श्री आशुतोष कुमार, सहायक निदेशक, एनबीपीजीआर#(NBPGR) द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् बैठक संपन्न हुई।

*****